नवभारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

पश्चिम एशिया में चल रहा ईरान, अमेरिका और इजरायल के बीच युद्ध अब खतरनाक मोड़ पर पहुंच चुका है. इस संघर्ष को 12 दिन बीत चुके हैं और पूरी दुनिया अनिश्चितता के दौर से गुजर रही है. किसी को यह नहीं पता कि यह युद्ध कब तक चलेगा और इसका अंतिम परिणाम क्या होगा. लेकिन इतना तय है कि इसका प्रभाव केवल युद्ध क्षेत्र तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि पूरी वैश्विक अर्थव्यवस्था को प्रभावित करेगा. सबसे ज्यादा असर ऊर्जा बाजार पर दिखाई दे रहा है. पश्चिम एशिया दुनिया के सबसे बड़े तेल उत्पादक क्षेत्रों में से एक है. जब भी इस क्षेत्र में युद्ध या अस्थिरता पैदा होती है, तो उसका सीधा असर पेट्रोलियम उत्पादों की कीमतों और आपूर्ति पर पड़ता है. यही कारण है कि इस युद्ध के चलते वैश्विक बाजार में कच्चे तेल की कीमतों में तेजी देखी जा रही है. पेट्रोल, डीजल और एलपीजी गैस को लेकर चिंता का माहौल बनना स्वाभाविक है.

संकट के समय संयम ही सबसे बड़ी ताकत

भारत जैसे ऊर्जा आयात पर निर्भर देश के लिए यह स्थिति चुनौतीपूर्ण हो सकती है. भारत अपनी जरूरत का लगभग 80 प्रतिशत कच्चा तेल आयात करता है और उसका बड़ा हिस्सा पश्चिम एशिया से आता है. ऐसे में वहां का कोई भी सैन्य संघर्ष भारत की ऊर्जा सुरक्षा को प्रभावित कर सकता है. हालांकि केंद्र सरकार ने स्पष्ट किया है कि देश के पास पेट्रोल और डीजल का पर्याप्त भंडार मौजूद है.

सरकार के अनुसार भारत के पास लगभग 50 दिनों तक की जरूरत पूरी करने लायक तेल का स्टॉक उपलब्ध है .यह भरोसा देने वाली बात है कि सरकार स्थिति पर लगातार नजर बनाए हुए है और आपूर्ति को बनाए रखने के लिए जरूरी कदम उठा रही है. लेकिन एलपीजी गैस की स्थिति कुछ अलग है. पेट्रोल और डीजल की तरह एलपीजी को बड़े पैमाने पर लंबे समय तक स्टॉक करके रखना संभव नहीं होता. इसी कारण घरेलू और कमर्शियल गैस की आपूर्ति में कुछ स्थानों पर दबाव महसूस किया जा सकता है .ऐसे समय में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका जनता की होती है. संकट के दौर में अक्सर अफवाहें तेजी से फैलती हैं. बाजार में घबराहट बढ़ती है और लोग जरूरत से ज्यादा सामान जमा करने लगते हैं. यही स्थिति कालाबाजारी को भी जन्म देती है. यदि लोग घबराकर अनावश्यक खरीदारी शुरू कर दें, तो कृत्रिम संकट पैदा हो सकता है, जिसका सबसे ज्यादा नुकसान आम उपभोक्ताओं को ही उठाना पड़ता है.

इसलिए आवश्यक है कि जनता संयम और समझदारी से काम ले. सरकार द्वारा दी जा रही जानकारी और आधिकारिक घोषणाओं पर भरोसा करना चाहिए. यदि प्रत्येक नागरिक अपनी जरूरत के अनुसार ही ईंधन और गैस का उपयोग करे, तो आपूर्ति व्यवस्था को संतुलित बनाए रखना संभव होगा. भारत ने पहले भी कई वैश्विक संकटों का सामना धैर्य और सामूहिक जिम्मेदारी के साथ किया है. चाहे कोविड महामारी का दौर रहा हो या वैश्विक आर्थिक अस्थिरता का समय, देश ने संयम और सहयोग के बल पर चुनौतियों को पार किया है. वर्तमान स्थिति भी उसी प्रकार की परीक्षा है .सरकार अपनी ओर से आपूर्ति व्यवस्था को बनाए रखने और संकट से निपटने के लिए हर संभव प्रयास कर रही है. ऐसे में समाज के हर वर्ग का दायित्व बनता है कि वह अफवाहों से दूर रहे, कालाबाजारी को बढ़ावा न दे और संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करे. किसी भी राष्ट्रीय संकट में घबराहट नहीं, बल्कि संयम ही सबसे बड़ी ताकत होती है. यदि देश की जनता धैर्य और सहयोग का परिचय दे, तो कोई भी वैश्विक संकट भारत की स्थिरता और व्यवस्था को डगमगा नहीं सकता.

सावित्रीबाई सामाजिक परिवर्तन की ज्योति

संदीप सिंह गहरवार

भारतीय समाज में शिक्षा, समानता और महिला सशक्तिकरण की जो मजबूत नींव आज दिखाई देती है, उसके निर्माण में कई महान समाज सुधारकों का योगदान रहा है. उन महान विभूतियों में सावित्रीबाई फुले का नाम अत्यंत सम्मान और आदर के साथ लिया जाता है. उन्हें भारत की प्रथम महिला शिक्षिका होने का गौरव प्राप्त है. उनका जीवन संघर्ष, समर्पण और समाज सुधार के अद्भुत उदाहरण के रूप में सदैव याद किया जाता है. उनकी पुण्यतिथि हमें न केवल उनके महान कार्यों को स्मरण करने का अवसर देती है, बल्कि समाज के प्रति अपने कर्तव्यों को समझने और आगे बढ़ाने की प्रेरणा भी देती है.

सावित्रीबाई फुले का जन्म 3 जनवरी 1831 को महाराष्ट्र के नायगांव में हुआ था. उस समय भारतीय समाज में महिलाओं की शिक्षा को लेकर अत्यंत संकीर्ण सोच थी. स्त्रियों को पढ़ाना तो दूर, उन्हें घर की चारदीवारी तक सीमित कर दिया जाता था. ऐसे समय में सावित्रीबाई फुले ने शिक्षा को अपना हथियार बनाया और समाज में व्याप्त अज्ञानता तथा भेदभाव के विरुद्ध आवाज उठाई. उनके जीवन में उनके पति ज्योतिराव फुले का महत्वपूर्ण योगदान रहा. ज्योतिराव फुले स्वयं एक प्रखर समाज सुधारक थे और उन्होंने सावित्रीबाई को शिक्षित किया. शिक्षा प्राप्त करने के बाद सावित्रीबाई ने महिलाओं और वंचित वर्गों को शिक्षित करने का संकल्प लिया, जो उस समय एक क्रांतिकारी कदम था.

भारत का पहला बालिका विद्यालय– सावित्रीबाई फुले और ज्योतिराव फुले ने मिलकर वर्ष 1848 में पुणे में भारत का पहला बालिका विद्यालय स्थापित किया. यह केवल एक विद्यालय नहीं था, बल्कि भारतीय समाज में शिक्षा के माध्यम से समानता और जागरूकता की क्रांति की शुरुआत थी. सावित्रीबाई फुले स्वयं उस विद्यालय की शिक्षिका बनीं और समाज की लड़कियों को शिक्षा देने का कार्य प्रारंभ किया.

शुरुआत में उन्हें भारी विरोध और अपमान का सामना करना पड़ा. जब वे स्कूल पढ़ाने जाती थीं, तो कट्टरपंथी लोग उन पर पत्थर, गोबर और कीचड़ तक फेंकते थे. लेकिन सावित्रीबाई ने इन कठिनाइयों से घबराने के बजाय अपने संकल्प को और मजबूत किया. वे अपने साथ एक अतिरिक्त साड़ी लेकर चलती थीं, ताकि रास्ते में गंदी हो जाने पर विद्यालय पहुंचकर बदल सकें और पढ़ाने का कार्य जारी रख सकें. यह उनके अदम्य साहस और दृढ़ इच्छाशक्ति का प्रतीक है. सावित्रीबाई फुले केवल शिक्षिका ही नहीं थीं, बल्कि महिला अधिकारों की सशक्त आवाज भी थीं. उन्होंने बाल विवाह, जातिगत भेदभाव, छुआछूत और महिलाओं पर होने वाले अत्याचारों के खिलाफ लगातार संघर्ष किया. उन्होंने विधवा महिलाओं के लिए आश्रय गृह स्थापित किया और उन्हें सम्मानजनक जीवन जीने का अवसर प्रदान किया.

उन्होंने समाज में व्याप्त कुप्रथाओं को समाप्त करने के लिए जनजागरण का अभियान चलाया. उस दौर में विधवाओं की स्थिति अत्यंत दयनीय थी. सावित्रीबाई फुले ने उनके पुनर्विवाह और सम्मानजनक जीवन के अधिकार के लिए भी आवाज उठाई. सावित्रीबाई फुले एक उत्कृष्ट कवयित्री भी थीं. उनकी कविताओं में समाज सुधार, शिक्षा और मानवता के प्रति गहरी संवेदना झलकती है. उनके काव्य संग्रहों में शिक्षा के महत्व और सामाजिक जागरूकता का संदेश मिलता है. उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से लोगों को अंधविश्वास, भेदभाव और कुरीतियों से मुक्त होकर प्रगतिशील समाज की ओर बढ़ने का आह्वान किया.

मानवता की सेवा में अंतिम सांस – सावित्रीबाई फुले का जीवन अंत तक मानव सेवा के लिए समर्पित रहा. वर्ष 1897 में जब पुणे में प्लेग महामारी फैली, तब उन्होंने बीमार लोगों की सेवा में स्वयं को समर्पित कर दिया. वे मरीजों को अपने कंधों पर उठाकर अस्पताल तक पहुंचाती थीं. इसी सेवा कार्य के दौरान वे स्वयं भी संक्रमित हो गईं और 10 मार्च 1897 को उनका निधन हो गया. इस प्रकार उन्होंने मानवता की सेवा करते हुए अपने प्राण न्योछावर कर दिए. आज सावित्रीबाई फुले का जीवन और उनके विचार पूरे देश के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं. उन्होंने जिस समय महिलाओं और वंचित वर्गों के अधिकारों के लिए आवाज उठाई, वह समय अत्यंत चुनौतीपूर्ण था. उनके साहस और दूरदर्शिता ने भारतीय समाज में शिक्षा और समानता की नई दिशा प्रदान की.

उनकी पुण्यतिथि पर उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम शिक्षा, समानता और महिला सशक्तिकरण के उनके आदर्शों को अपने जीवन में अपनाएं और एक न्यायपूर्ण तथा समतामूलक समाज के निर्माण में अपना योगदान दें. सावित्रीबाई फुले केवल एक नाम नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन की वह ज्योति हैं जो आने वाली पीढ़ियों को सदैव मार्गदर्शन देती रहेगी. उनके संघर्ष और योगदान को भारत सदैव कृतज्ञता और सम्मान के साथ याद करता रहेगा.

ग्वालियर चंबल डायरी

शहर के अमन को न लगे नजर... फिर गर्माया है प्रतिमा विवाद

हरीश दुबे

ग्वालियर चंबल में अंबेडकर प्रतिमा विवाद एक बार फिर से गरमा गया है. भीम आर्मी के नेता दामोदर यादव ने ग्वालियर हाईकोर्ट परिसर में डॉ. अंबेडकर की प्रतिमा स्थापित करने के संकल्प के साथ पदयात्रा का ऐलान किया तो प्रशासन अलर्ट मोड पर आ गया. पदयात्रा को आज बुधवार के रोज दतिया के गोराघाट से शुरू होकर डबरा में रैली और सभा करना थी लेकिन ग्वालियर के अफसरान ने गोराघाट पहुंचकर सिंध नदी पर बैरिकेडिंग कर पदयात्रियों को ग्वालियर सीमा में प्रवेश करने से ही रोक दिया. ग्वालियर और दतिया जिलों के बॉर्डर पर अभी भी 500 से अधिक जवान तैनात हैं. प्रशासन की मानें तो बिना पूर्व अनुमति के ग्वालियर जिले की सीमा में प्रवेश पर पूर्णत: प्रतिबंध लगाया गया है.

प्रशासन ने दतिया के गोराघाट और ग्वालियर के डबरा में सभाओं की परमिशन भी कैंसिल कर दी है. खास बात यह है कि कलेक्टर रुचिका चौहान और एसपी धर्मवीर सिंह खुद जिले की सीमा पर सुरक्षा व्यवस्था को पुख्ता करने के लिए मोर्चा संभाले हुए हैं. न सिर्फ सिंध नदी पुल बल्कि सीमावर्ती दूसरे क्षेत्रों में भी पुलिस जवानों की तैनाती की गई है. सीमावर्ती क्षेत्रों में भी सघन तलाशी अभियान चल रहा है. हालांकि आजाद समाज पार्टी अभी भी पहले से तयशुदा कार्यक्रम के मुताबिक 14 मार्च को दोपहर बारह बजे ग्वालियर हाईकोर्ट परिसर पहुंचकर यहां अम्बेडकर प्रतिमा लगाने के संकल्प पर डटी हुई है, इसके उलट अंचल के सवर्ण समाज संगठन भी जवाबी मोर्चा खोले हुए हैं. पहले जो भी घटनाएं हुई हों लेकिन प्रशासन के सख्त इंतजामों के चलते फिलहाल पिछले कुछ हफ्तों में दोनों खेमों के बीच उग्र टकराव की नौबत नहीं आई है. हम भी यही चाहते हैं कि शहर में अमन चैन रहे और हर विवाद का हल सौहार्द और बातचीत से निपटे.

कोर्ट के फैसले के बाद विजयपुर में नहीं बनी उपचुनाव की नौबत

विजयपुर विधानसभा क्षेत्र के दोनों प्रतिद्वंदी राजनीतिक दलों ने कांग्रेस विधायक मुकेश मल्होत्रा के विपरीत फैसला आने की स्थिति में खुद को मुकम्मल रखने के लिए उपचुनाव की तैयारियां कर रखी थीं, स्थानीय जनता को भी उपचुनाव के आसार लग रहे थे लेकिन हाईकोर्ट के फैसले ने इन सभी अटकलों, कयासों और चर्चाओं पर विराम लगा दिया. पिछले उपचुनाव में पराजित हुए भाजपा प्रत्याशी रामनिवास रावत को विधायक घोषित कर दिया गया. यह कांग्रेस के लिए बड़ा झटका है.

कुछ महीने पहले चुनाव हारने के बाद रामनिवास को कैबिनेट मंत्री के ओहदे से रुखसत होना पड़ा था लेकिन अब भाजपा खेमे में रामनिवास की फिर से प्रदेश की कैबिनेट में ताजपोशी की उम्मीद जताई जा रही है. हालांकि खुद रामनिवास जानते हैं कि यह सब इतना आसान नहीं होगा, वजह यह कि हाईकोर्ट ने निवर्तमान विधायक मुकेश मल्होत्रा को सुप्रीम कोर्ट में अपील करने के लिए पंद्रह दिन का समय दिया है.

बालेन्दु के बंगले पर नेताओं का मेला, कभी था सियासत का पावर सेंटर

झांसी रोड का एक नंबर बंगला करीब दो दशक तक ग्वालियर चंबल की राजनीति का पावर सेंटर बना रहा. यह माधवराव के दौर की बात है जब उनके बालसखा बालेंदु शुक्ला महल के कोटे से अर्जुन, वोरा, श्यामा और दिग्विजय जैसे मुख्यमंत्रियों की सरकारों में ताकतवर मंत्री रहे. बड़े महाराज के न रहने के बाद नए महाराज से उनकी पटरी मेल नहीं खाई और उन्हें राजनीतिक अस्तित्व बनाए रखने के लिए कभी हाथी की सवारी करना पड़ी तो भगवा भी हो गए. महाराज के कांग्रेस छोड़ते ही बालसखा फिर से कांग्रेस में लौट आए. विपक्ष की राजनीति ही सही, उनका बंगला फिर आबाद है. आज होली मिलन समारोह एवं कवि सम्मेलन के बहाने उन्होंने अपने बंगले पर सूबे के तमाम बड़े नेताओं और आधा दर्जन से ज्यादा विधायकों की मौजूदगी में त्यौहार के बहाने सियासत की महफिल, बालेंदु के शब्दों में कहें तो मोहब्बत की दुकान सजाई. इस जलसे में अरुण यादव, जयवर्धन, अशोक सिंह, हेमंत कटारे सहित सतीश सिकरवार, सुरेश राजे, केशव देसाई और तमाम जिलों के कांग्रेस पदाधिकारी तशरीफ लाए. गाना बजाना और कविताओं के पाठ के साथ मंच से इतर चर्चाओं में ग्वालियर में पार्टी की कमजोर होती स्थिति को दुरुस्त करने पर भी मंथन हुआ. जलसे में जीतू पटवारी भी आ रहे थे लेकिन उनका दौरा प्रोग्राम ऐन मौके पर बदल गया. पहले उन्हें सुबह आना था लेकिन वे शाम को वंदे भारत से ग्वालियर पहुंचे. हालांकि बालेंदु अपनी सियासी एक्टिविटी पहले की ही तरह बनाए हुए हैं लेकिन खबर यही है कि वे अपनी पचास साल पुरानी राजनीतिक विरासत अपने नाती प्रांजल तिवारी को सौंपने जा रहे हैं, प्रांजल को बालेंदु ने हाल ही में युवा कांग्रेस के प्रदेश महासचिव का चुनाव बड़े अंतर से जितवाया है.

अब एक हीरो के भरोसे नहीं है क्रिकेट

जब टेस्ट क्रिकेट का बोलबाला था, तब गिने-चुने खिलाड़ी हीरो माने जाते थे जैसे कि क्रिकेट के भगवान या मास्टर ब्लास्टर कहलाने वाले सचिन तेंदुलकर. उनके पहले लिटिल मास्टर कहलाने वाले सुनील गावस्कर चर्चित थे. इनके आउट होते ही हताशा छा जाती थी. इसी तरह की छवि महेंद्रसिंह धोनी, किंग कोहली कहलाने वाले विराट तथा 'रो. हिट' कहलाने वाले रोहित शर्मा की बनी. राहुल द्रविड़ की टिके रहने की क्षमता के कारण उन्हें 'दि वाल' कहा गया. वेस्ट इंडीज में ब्रायन लारा तथा ऑस्ट्रेलिया में रिकी पोंटिंग को हीरो माना गया. ये सिर्फ बल्लेबाज न होकर क्रिकेट के शिल्पकार थे. तब क्रिकेट के कलात्मक शॉट जैसे कि पुल, हुक, स्ट्रेट ड्राइव, स्क्वेयर कट, हेलीकॉप्टर शॉट का उल्लेख कमेंटेटर करते थे. अब सर्वत्र टी-20 का बोलबाला है, जिसमें बल्लेबाज अपना मनपसंद शॉट मारने के लिए सही गेंद की प्रतीक्षा नहीं करता, बल्कि ठोकता चला जाता है. टी-20 की पारी 50-60 गेंदों में सिमट जाती है. शुरुआती 6 ओवर पावर प्ले के रहते हैं. उसमें बिना विकेट खोए जिस टीम ने 70-75 रन बना लिए उसकी जीत की संभावना बढ़ जाती है. 15 गेंदों में बल्लेबाज को अधिकतम रन बनाने का लक्ष्य रखकर खेलना पड़ता है. बस उसका बल्ला चौके-छक्के की बौछार के साथ चलना चाहिए.

यही है टी-20 का फटाफट क्रिकेट! इसमें सफलता एक खिलाड़ी की नहीं, पूरी टीम की मानी जाती है. भेदक गेंदबाजी और सतर्क फील्डिंग का नतीजे पर असर पड़ता है. हेड कोच के रूप में गौतम गंभीर ने सुनिश्चित किया कि कोई ऐसा खिलाड़ी न हो जो सुपर हीरो होने की ईगो पाले. इसीलिए वर्ल्डकप फाइनल जीतने के बाद भी सूर्यकुमार यादव का वह कद नहीं है, जो धोनी, विराट कोहली या रोहित शर्मा का बना हुआ था. इस वर्ल्डकप की ऐतिहासिक जीत में सभी खिलाड़ियों का महत्वपूर्ण योगदान है. अभिषेक, संजू, ईशान किशन का बल्ला चमका तो बुमराह ने गेंदबाजी का करिश्मा दिखाया. गौतम गंभीर के चैम्पियनों में कोई भी सुपरस्टार नहीं है. सब जीत में बराबरी के हकदार हैं.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

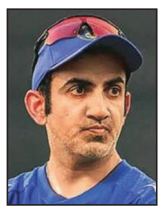

बिग बी ने अयोध्या में भूखंड खरीद डाला बने छोरा सरयू किनारे वाला

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, सदी के महानायक कहलाने वाले अमिताभ बच्चन ने हाउस ऑफ अभिनंदन लोढ़ा से अयोध्या में 2.67 एकड़ जमीन 35 करोड़ रुपये में खरीदी है. रहते हैं मुंबई में और जमीन खरीदते हैं यूपी में! ऐसा क्यों?'

हमने कहा, 'इसे कहते हैं इन्वेस्टमेंट! धनवान लोगों में यही तो सूझबूझ होती है कि सही समय पर सही जगह निवेश करो. जमीन या अन्य प्रॉपर्टी समय पर खरीदो, क्योंकि आगे चलकर दाम और बढ़ जाएंगे.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, हमें तो लगता है कि भगवान राम की अयोध्या में धार्मिक भावना की वजह से बिग बी ने जमीन खरीदी है. कहा गया है-काशी बड़ी गोदावरी, तीरथ बड़े प्रयाग, सबसे बड़ी अयोध्या जहां राम लिए अवतार! यह वही अयोध्या है, जहां के राजा दशरथ के रथ दसों दिशाओं में चलते थे. इनमें 8 दिशाएं भूमंडल की और 2 दिशाएं आकाश और पाताल की हैं. लंका में दशानन था, तो अयोध्या में दशरथ! रघुवंश के सभी प्रतापी राजाओं की राजधानी अयोध्या रही. इन राजाओं में हरिश्चंद्र जैसे सत्यवादी, दिलीप जैसे कामधेनु नंदिनी गाय की सेवा करने वाले, रघु जैसे शूरवीर, देवासुर संग्राम में देवताओं की ओर से युद्ध करने वाले राजा दशरथ का समावेश था.'

हमने कहा, 'अमिताभ बच्चन इलाहाबादी हैं, जहां से उन्होंने लोकसभा चुनाव लड़कर हेमवतीनंदन बहुगुणा जैसे राजनीतिक दिग्गज को हराया था. बिग बी के पिता डॉ. हरिवंशराय बच्चन इलाहाबाद यूनिवर्सिटी में अंग्रेजी के प्रोफेसर थे. तीर्थराज प्रयागराज में गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती का संगम है. अमिताभको वहां जमीन खरीदनी थी. यह छोरा गंगा किनारे वाला अचानक सरयू किनारे वाला कैसे बन गया?'

पड़ोसी ने कहा, 'बिग बी को मालूम है कि राम लला के भव्य मंदिर निर्माण के साथ ही अयोध्या विश्व के मानचित्र पर आ गया है. वहां तीर्थयात्रा के साथ ही पर्यटन बढ़ेगा. फाइव स्टार होटल और रिसोर्ट बनते चले जाएंगे. जमीन सोने के दाम पर बिकेगी. यही दूरदृष्टि रखकर अमिताभ बच्चन ने अयोध्या में भूखंड खरीदा है. जब भी वह अयोध्या जाएंगे, उनके फैन गाएंगे अयोध्या नगरिया में बिग बी पधारे!'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12195

- डॉ. सागर खादीवाला

1	2	3		■	4	5	6
7			■	8			
	■	9			■	■	
10			■	11	12	13	■
■	■	■	14				■
15	16			■	■	17	18
19		■	20	21	■	22	
	■	23				■	

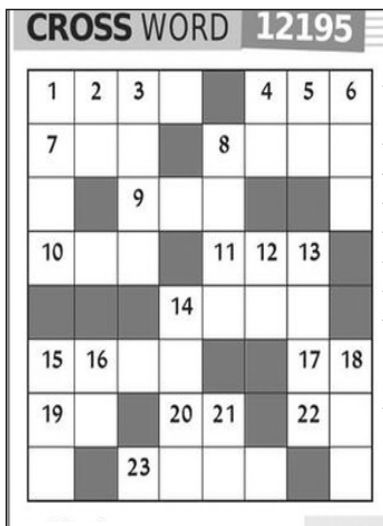

बाएं से दाएं

1. ईसा मसीह की माता का नाम 4. पपीहा नामक पक्षी 7. खेती की पैदावार, उपज (उर्दू) 8. चित्त, मन, जी 9. गवैया, गाने वाला 10. गति, चाल (उर्दू) 11. चैन, सुख, आराम (उर्दू) 14. चिंता 15. सीख, उपदेश, अच्छी राय (उर्दू) 17. छोटा, कम 19. एक चौपाया, मूर्ख, खर 20. प्रशंसा या आश्चर्यसूचक शब्द 22. समय, मृत्यु 23. हिलना, गति, डोलना

ऊपर से नीचे

1. गुलूबंद, गले या सिर पर बांधने का ऊनी कपड़ा (अंग्रेजी) 2. क्रोध, कोप 3. हमला, आक्रमण (उर्दू) 4. ताली, कुंजी 5. निश्चित, ठहराया हुआ 6. बूंद 8. हुज्जत, विवाद, झगडा 12. वायु 13. धूम, हलचल 14. नौका के पिछले भाग में लगी वह लकड़ी जिससे नौका इधर-उधर घुमाई जाती है 15. नकदी 16. सरल, अवक्र, जो टेढ़ा न हो 18. किसी द्रव पदार्थ में भली-भांति मिल जाना 21. अधिकार (उर्दू)

Solution 12194

अ	द	म्य	■	क	रा	ल	■
दा	ल	■	का	ल	■	ह	वा
व	■	स	ला	ह	■	र	न
त	क	ली	■	■	छा	■	री
■	द	म	न	■	ल	ता	■
जा	म	■	क	म	■	ला	भ
न	■	क	ल	दा	र	■	य
ना	दा	नी	■	री	त	ना	■

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में आर्थिक सहयोग मिलेगा, शिक्षा के क्षेत्र में यात्रा होगी, वर्ष के मध्य में सामाजिक कार्यों में मन खिन्न रहेगा, व्यापार में व्यर्थ की भागदौड़ एवं व्यय में वृद्धि होगी,मित्र के कारण तनाव रहेगा, वर्ष के अन्त में प्रतिष्ठा एवं यश में वृद्धि होगी, घरेलू कार्यो में व्यस्तता रहेगी, व्यय में नियंत्रण रखें.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को पारिवारिक तनाव रह सकता है, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को कर्मचारियों के सहयोग से कार्यों में सफलता मिलेगी, चिन्ता का निवारण होगा, कर्क राशि के व्यक्तियों को आर्थिक कमी का अनुभव होगा, सिंह राशि के व्यक्तियों को पूर्व निर्धारित कार्यो में सफलता मिलेगी, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को नौकरी में सफलता, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को शिक्षा अच्छी रहेगी. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को धार्मिक यात्रा के योग हैं.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक सुन्दर, सुशील कोमल, भावुक परोपकारी तथा मिलनसार होगा. खेलकूद के प्रति अधिक ध्यान देगा. स्वास्थ्य अच्छा रहेगा. बचपन में आकस्मिक स्वास्थ्य कष्ट होगा. विद्या में विलंब होगा. माता पिता का भक्त होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

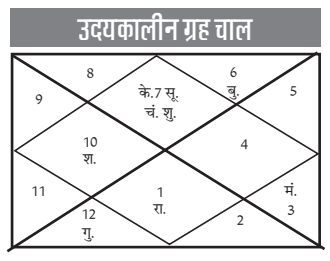

पंचांग

रा.मि. 20 संवत् 2082 चैत्र कृष्ण अष्टमीं बुधवासरे रात 2/18, ज्येष्ठा नक्षत्रे रात 8/24, वज्र योगे दिन 8/0, बालव करणे सू.उ. 6/8, सू.अ. 5/52, चन्द्रचार वृश्चिक रात 8/24 से धनु, शु.रा. 8, 10, 11, 2, 3, 6 अ.रा. 9, 12, 1, 4, 5, 7 शुभांक- 0, 3, 7.

व्यापार भविष्य

चैत्र कृष्ण अष्टमीं को ज्येष्ठा नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी में मंदी होगी, रूई कपास में तेजी होगी. गुड़ खांड़, के भाव धीरे धीरे नरम गरम रहेगें. आज हाजिर मार्केट में बने भाव नीचे गिर सकते हैं. व्यापार का रूख सामान्य रहेगा. भाग्यांक 2543 है.

मेष- धन मान सम्मान एवं यश कीर्ति में वृद्धि होगी. अचानक नये कार्य आपके उपर आ सकते हैं. सुख रहेगा. विकास की योजना बनेगी.

वृषभ- व्यर्थ की समस्या का सरलता से समाधान होगा. सहयोग में कमी आयेगी. दूर दराज की यात्रा होगी. विवादास्पद मामलों को टालें.

मिथुन- आपसी तनाव से मानसिक परेशानी होगी. कोई ऐसा कार्य बनेगा. जो आपके लिये हितकर रहेगा. मांगलिक कार्यो पर खर्च होगा.

कर्क- किसी बहुप्रतीक्षित कामना की पूर्ति होगी. जीवन साथी का सहयोग रहेगा. ज्वरअतिसार से पीड़ित हो सकते है. सुख का अनुभव रहेगा.

सिंह- आपके दायित्वों की पूर्ति होगी. यात्रा में लाभ प्राप्त होगा. पुरूषार्थ बना रहेगा. दूर दराज की यात्रा होगी.जोखिम के कार्यो से बचने का प्रयास करें.

कन्या- महत्वाकांक्षी योजनाओं की पूर्ति होगी. मनोरंजक प्रवास हो सकता है. सतर्कता व सावधानी बांछनीय है. यश मिलेगा. सफलता मिलेगी.

तुला- शासकीय कार्यों में यश, मान सम्मान मिलेगा. प्रिय संदेश प्राप्त हो सकता है. दूर दराज की यात्रा में सतर्कता रखें. दाम्पत्य सुख मिलेगा.

वृश्चिक- धार्मिक कार्यों में खर्च होगा. दूर गये मित्र के संबंध में शुभ समाचार प्राप्त होगा. सावधानी बांछनीय. कार्य कुशलता बनी रहेगी.

धनु- सत्कार्यो में खर्च होगा. आर्थिक एवं व्यापारिक कार्यो में लाभ होगा. विरोधी वर्ग सक्रिय रहेगा. लाभ होगा. शुभ संदेश प्राप्त होगा. प्रसन्नता रहेगी.

मकर- पारिवारिक वातारण सुखद एवं अनुकूल रहेगा. मन में विशेष हर्ष रहेगा. स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें. लाभ होगा. पद प्रतिष्ठा बढ़ेगी.

कुम्भ- आर्थिक कार्यो में सावधानी रखें. जोखिमदारी कार्यो को फिलहाल टालदेना ही उचित होगा. अनावश्यक वाद विवाद को टालें.

मीन- पारिवारिक निकटता रहेगी, सुखद समाचार मिलेगा. किसी कार्य में संलग्नता रहेगी. भूमि भवन मकान आदि का कार्य सरलता से होगा.

SUDOKU 7327

		5			3			
	2			9	5			
9						6		
			9				3	5
	6						7	
4	8				1			
		7						3
			2	4			9	
			8			2		

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7326

2	7	6	4	9	5	8	1	3
5	8	1	7	2	3	9	6	4
9	3	4	8	1	6	2	5	7
6	5	9	2	4	8	3	7	1
8	4	7	9	3	1	6	2	5
1	2	3	5	6	7	4	9	8
3	6	5	1	8	2	7	4	9
7	9	2	3	5	4	1	8	6
4	1	8	6	7	9	5	3	2